ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 02, May 2019

# 'बुन्देलखण्ड के राजवंश'

**[1]डॉ0 आनन्द गोस्वामी**

[1]एसोसिएट प्रोफेसर / विभागाध्यक्ष–इतिहास, राजकीय स्ना0 महाविद्यालय, चरखारी (महोबा) उ0प्र0

Received: 08 May 2019, Accepted: 11 May 2019 ; Published on line: 15 May 2019

## Abstract

भारत वर्ष का मध्यवर्ती होने से बुन्देलखण्ड, भारत का हृदय–स्थल माना जाता है, यहाँ आदि काल से ही विभिन्न संस्कृतियों का संगम होता रहा है। रामायण से ज्ञात होत है कि त्रेतायुग में मर्यादा पुरूषोत्तम श्री राम ने भार्या सीता और भाई लक्ष्मण के साथ अपने बनवास अवधि का कुछ समय बुन्देलखण्ड के चित्रकूट में बिताया था। चेदि महाजनपद आधुनिक बुन्देलखण्ड के प्रारंभिक स्वरूप का प्रतिनिधित्व करता था, कालक्रमेण इस क्षेत्र में गौड़, नाग, गहरवार ब्राह्मण तथा प्रतिहार वंशों ने अपनी सत्ता स्थापित की। लगभग नवीं शता0 ई0 के मध्य में यहाँ चन्देल राजवंश तथा 11 वीं शता0 के मध्य में बुन्देला राजवंश तत्पश्चात मराठे और अंततः ब्रिटिश सत्ता अस्तित्व में आई ।

**मुख्य शब्द–** चित्रकूट, त्रेतायुग, अंगुन्तर निकाय, षोडश–महाजनपद, चन्देल, बुन्देला, मराठे, छत्रसाल, बाजीराव प्रथम, मस्तानी।

## Introdution

भारत का हृदय स्थल बुन्देलखण्ड अपनी गौरवपूर्ण ऐतिहासिक परंपरा एवं पुरा–सम्पदा के लिए सुविख्यात रहा है, यहाँ आदिकाल से ही विभिन्न संस्कृतियों का संगम होता रहा है। विन्ध्य पर्वत श्रृंखलाओं को अपने अंचल में समेटे बुन्देलखण्ड की प्राकृतिक सीमाओं की निर्धारक यमुना चंबल, टोंस तथा नर्मदा नदियाँ रही है।

जिस समय भारत के पश्चिमोत्तर में ''हड़प्पा'' सभ्यता तथा उसके बाद आर्यो द्वारा विकसित ''वैदिक'' सभ्यता विद्यमान थी उस समय यहाँ विन्ध्य क्षेत्र में ताम्र–पाषणिक संस्कृति अस्तित्व में थी। भारत के राजनैतिक इतिहास का प्रारंभ वर्तमान ईसा पूर्व सातवीं शताब्दी के मध्य से स्वीकारा जाता है। बौद्ध ग्रंथ अंगुन्तर निकाय से जिस ''चेदि'' नामक महाजनपद का पता चलता है वही महाजनपद आधुनिक बुन्देलखण्ड के प्रारंभिक स्वरूप का प्रतिनिधित्व करता था। महाभारत काल में यहाँ का

प्रसिद्ध शासक शिशुपाल था। कालक्रमेण इस क्षेत्र में गौड़, नाग, गहरवार, ब्राहम्ण तथा प्रतिहार वंशो ने अपनी सत्ता स्थापित की। नवीं शता0 ई के मध्य में यहाँ चन्देला राजवंश असित्व में आया। चंदेल शासक जेजा/जय सिंह द्वारा प्रशासित होने के कारण यह क्षेत्र जेजाक–भुक्ति कहलाया।

बन्देलखण्ड की एक सुदीर्घ ऐतिहासिक परम्परा है। प्रागैतिहासिक काल में कुछ गुफा चित्र एवं पाषाण औजार प्रमाणित करते हैं कि यहाँ आदिम जातियों का निवास था। महाकाव्य काल में अगस्त मुनि इस क्षेत्र में आये, जिन्होने कालिंजर को अपना तप आश्रम बनाया था। तत्पश्चात यह क्षेत्र तपस्या और साधना स्थल के रूप में विख्यात हो गया। अयोध्या के राजकुमार रामचन्द्र भाई लक्ष्मण और पत्नी सीता के साथ इस क्षेत्र में मनोरम तीर्थ चित्रकूट में आकर ठहरे थे। महाजनपद काल में इस चेदि नाम से जाना जाता था। मौर्यकाल में अशोक के प्रभाव के कारण बुन्देलखण्ड क्षेत्र में भी बौद्ध धर्म का प्रचार हुआ था, जिसके प्रमाण गुर्जरा (दतिया) एवं रूपनाथ के शिलालेख हैं। गुप्तकाल में बुन्देलखण्ड का दक्षिण पूर्वी क्षेत्र गुप्त राजाओं के प्रत्यक्ष शासन में था, जिसका मुख्यालय एरण नगर में था। गुप्तोत्तर काल में बुन्देलखण्ड में अनेकानेक छोटे राज्यों का उदय हुआ जिनमें कलचुरि और चन्देल राज्य प्रमुख हैं।

बुन्देलखण्ड की वास्तविक पहचान चन्देल शासकों से है जिन्होने निरन्तर तीन सौ वर्षों तक इस क्षेत्र में शासन किया। चन्देलों के प्रमुख केन्द्र छतरपुर, महोबा, कालिंजर तथा खजुराहो थे।

चन्देल सत्ता के बाद बुन्देलखण्ड दिल्ली के सुलतानों एवं मुगल बादशाह के अधीन रहा। 11 वीं शता0 ई0 के मध्य में यहाँ ''बुन्देला'' राजवंश असित्तव में आया, बुन्देलों द्वारा प्रशासित होने के कारण यह क्षेत्र ''बुन्देलखण्ड कहलाया। बुन्देले, गहिरवार राजपूतों के वंशज स्वीकारे जाते है, इनके आविर्भाव के सम्बंध में समसामुद्दौला शाहनवाज खाँ कृत मआसिरूल्उमरा से ज्ञात होता है कि, काशी से वीरभद्र ने आकर बुन्देलखण्ड में अपना अधिकार जमाया था। ''गोरेलाल'' की कृति ''छत्र–प्रकाश'' से ज्ञात होता है कि इनके पाँचवे पुत्र ''जगदास' जो पंचम कहलाए ने पूजा के दौरान विन्ध्याचल देवी के समक्ष अपने रक्त की बूँदे गिरायी, तभी से यह वंश ''बुन्देला'' कहलाने लगा था। यद्यपि कुछ विद्वान विन्ध्य क्षेत्र के शासक होने के कारण विन्ध्येल इस शब्द से बुन्देल तदनंतर ''बुन्देलखण्ड'' शब्द की व्युत्पति स्वीकारते है।

प्रारम्भ में बुन्देल राजाओं की राजधानी महौनी, सल्तनतकाल में गढ़कुंडार और मुगलकाल के प्रारम्भिक समय में ओरछा स्थानान्तरित हुयी। ''मआसिरूल् उमरा'' से पता चलता है कि पंचम की 12

ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 02, May 2019

वीं पीढ़ी में रूद्रप्रताप/प्रतापरूद्र हुए जिन्होंने 1531 ई0 में ओरछा नगर की नींव डाली और ''कुडार'' को छोड़कर इसे अपनी राजधानी बनाया। इनके तीसरे पुत्र उदयाजीत ने महेबा में आकर अपना राज्य स्थापित किया था, जिनके वंश में पन्ना राज्य के संस्थापक महाराज ''छत्रसाल'' हुए। बन्देलखण्ड में गैर क्षेत्रीय मराठा सत्ता का उदय इन्हीं महाराजा छात्रसाल के समय हुआ।

इतिहासकार '' एल0 पी0 शर्मा '' के अनुसार हल्दीघाटी युद्ध के बाद तत्कालीन ओरछा नरेश मधुकर शाह ने सम्राट अकबर से संधि करके अधीनता स्वीकार ली थी। ओरछा का प्रसिद्ध ''रामलला'' का मंदिर इनकी रानी गणेश देवी का ही बनवाय हुआ है। मधुकर शाह के एक पुत्र ''इन्द्रजीत सिंह ने'' खजोह/कछोवा का राज्य स्थापित किया था, दूसरे पुत्र रामसाह '' चंदेरी '' के शासक बने। छोटे पुत्र वीर सिंह देव पर शहजादा सलीम की कृपा बनी रही और ओरछा की गद्दी प्राप्त हुई। इनकी अपार शक्ति और वैभव की पुष्टि समकालीन इतिहास कार अब्दुल हमीद लाहौरी भी करते है। ओरछा का दुर्ग, दुर्ग के अंदर बना जहाँगीर महल, दतिया का राजमहल ये सभी वीर सिंह देव के ही बनवाये हुये है। इनके पुत्र ''जुझार सिंह द्वारा मुगलों के प्रति विद्रोही रूख अपनाने के कारण इन्हें शाहजहाँ की नाराजगी झेलनी पड़ी, तत्कालीन इतिहासकार खाफी खाँ ने मुन्तखब उल लुबाब में लिखा है कि ओरछा प्रांत खालसा कर इसलामाबाद नाम से बाकी खाँ किलमाक को सौंपा गया।

ओरछा के क्षेत्रों को मुगल साम्राज्य में मिलाये जाने का भयंकर प्रतिरोध हुआ, जिसका नेतृत्व महेबा के महाराजा 'चम्पतराय' ने किया। इससे त्रस्त होकर शाहजहाँ ने जुझार सिंह के भाई पहाड़ सिंह को 1641 में ओरछा गद्दी वापिस सौंप दी।

महेबा की गद्दी पर पिता चम्पतराय के पश्चात ''छत्रसाल'' आसीन हुए। इन्होंने 1675 में पन्ना पर अधिकार कर उसे अपनी राजधानी बनाया। धीरे–धीरे करीब सत्तर राजकुमार छत्रसाल के इर्द–गिर्द इकठ्ठा हो गये थे, पर छत्रसाल इस बात को अच्छी तरह समझ चुके थे कि मुगलों से लम्बी लड़ाई संभव नहीं है। अंततः जनवरी 1707 में इनके आत्मसमर्पण के बाद इन्हें चार हजार का मनसब देकर ''राजा'' घोषित कर दिया गया पर 1728 में इन्होंने बाजीराव प्रथम की सहायता से मुगल सूबेदार ''बंगश'' को बुन्देलखण्ड से खदेड़ दिया और अब छत्रसाल मुगलों से स्वतंत्र हो गये, तथा सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड के अधिपति बन बैठे ।

बुन्देलखण्ड केसरी महाराजा छत्रसाल की शक्ति और लोकप्रियता में बहुत तेजी से हुई वृद्धि आधुनिक इतिहासविदों को आश्चर्य में डाल देती है। जे. एन. सरकार का इस संदर्भ में मत उल्लेखनीय

है, जिसके अनुसार – इसका कारण फिदाई खाँ द्वारा ओरछा के मंदिरो के आक्रमण में मिल जाता है, जिसने सभी हिंदुओं को छत्रसाल की शरण में जाने को मजबूर किया। पर छत्रसाल द्वारा चतुर्दिक विजय प्राप्त करने का श्रेय ''जनश्रुति'' इनके गुरू बाबा प्राण – नाथ को देती है, जिन्होने 'धुबेला' में इन्हें आर्शीवाद देते हुए कहा था –

'' छत्ता तेरे राज्य में धन–धन धरती होय।
जित–जित घोड़ा मुँह करे तित–तित फत्ते होय।।''

कृतज्ञ महाराज छत्रसाल ने पेशवा की शान में 1729 में दरबार का आयोजन कर बाजीराव प्रथम को अपना दत्तक पुत्र मानते हुए राज्य का एक बड़ा भाग कालपी, सागर, झाँसी और ह्रदयनगर निजी जागीर के रूप में देने के साथ ही एक अद्वितीय सुंदरी मस्तानी भी भेंट की, जबकि इनके बड़े पुत्र ह्रदयशाह को पन्ना तथा दूसरे जगतराज को जैतपुर का राज्य मिला, अन्ततः 12 मई 1731 ई0 को छत्रसाल गोलोक–बासी हुए। 1818 ई0 में पेशवा की गद्दी खत्म होने तक मराठों का आधिपत्य यहाँ कायम रहा तदनन्तर बुन्देलखण्ड पर ब्रिटिश सरकार का राजनीतिक प्रभुत्व स्थापित हुआ जो 1947 तक निर्वाध रूप से बना रहा।

## संदर्भ – सूची

1.'समसामुद्दौला शाहनवाज खाँ कृत मआसिरूलउमरा का
ब्रजरत्नदास कृत हिन्दी अनुवाद, पृ0 202
2. गोरेलाल तिवारी कृत छत्रप्रकाश, प्रथम अध्याय
3. ब्रजरत्नदास कृत हिन्दी अनुवाद, पृ0 275
4. एल0 पी0 शर्मा कृत मुगल कालीन भारत,
5. अब्दुल हमीद लाहौरी कृत पादशाहनामा, भाग 1,
6. जहाँगीर कृत तुजुके जहाँगीरी,
7. खाफी खाँ कृत मुन्तखब उल लुबाब, जि0 1, पृ0 454
8. लाहौरी कृत पादशाहनामा, जि0 2, पृ0 136,193
9. हरिश्चन्द्र वर्मा कृत मध्यकालीन भारत, भाग2,
10. गोरेलाल कृत छत्रप्रकाश, पृ0 78–79

11. जे0 एन0 सरकार कृत फाल ऑव द मुगल एम्पायर
12. काशी प्रसाद त्रिपाठी – बुन्देलखण्ड का वृहद इतिहास
13. नर्मदा प्रसाद गुप्त – बुन्देली लोक साहित्य, परम्परा और इतिहास